RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 February 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd Frbruary 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–सत्रहवां | अंक– दसवां | फरवरी–2020

4

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
महाराज कृपाल सिंह जी की

जन्म जयंती का सन्देश

7

सतसंग- परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

अपनी आदतें बदलें

29

परम सन्त कृपाल जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

अपने यंत्र को धूल से मुक्त करें

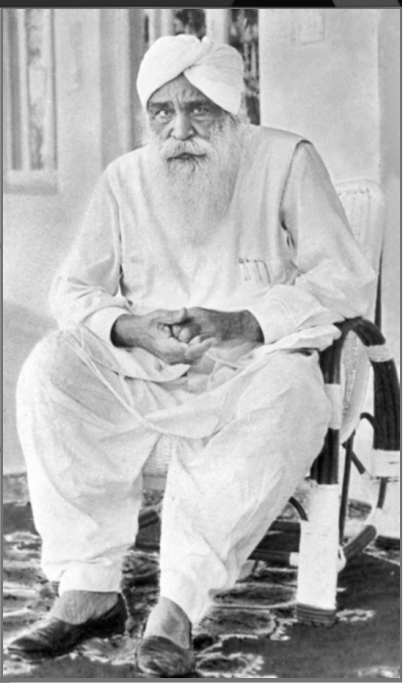

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

28, 29 फरवरी व 01 मार्च 2020

31 मार्च, 01 व 02 अप्रैल 2020

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली-110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार - **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक - **नन्दनी**
सहयोग - **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

E-mail : dhanajaibs@gmail.com 215 Website : www.ajaibbani.org

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

6 फरवरी, 1980

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज की जन्म जयंती का सन्देश

प्यारे भाईयों और बहनों,

आज हमारे महान गुरु महाराज कृपाल सिंह जी का जन्मदिन है। वे आत्माएँ भाग्यशाली थी जो सर्वशक्तिमान हुजूर कृपाल सिंह जी महाराज के सम्पर्क में आई और उससे भी ज्यादा, वे आत्माएँ भाग्यशाली थीं जिन्हें आपसे नामदान प्राप्त हुआ। आज हम वह दिन मना रहे हैं, जब खोई हुई आत्माओं को वापिस घर ले जाने के लिए, आप इस संसार मंडल पर, इंसानी जामें में आए।

जिनका सम्पर्क महाराज कृपाल से हुआ और जिन्हें उनसे नामदान प्राप्त हुआ आज वे आपको याद कर रहे हैं और आपका

जन्मदिन मना रहे हैं। हम जन्मदिन क्यों मनाते हैं? कोई भी व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर आसानी से देते हुए कह सकता है कि हम आपको खुश करने के लिए आपका जन्मदिन मना रहे हैं।

आप जानते हैं कि हम जन्मदिन पर केक बनाते हैं जिसका जन्मदिन मना रहे होते हैं, उसके लिए हैप्पी बर्थ डे का गीत गाते हैं केक खाते और खुशियाँ मनाते हैं। यह सांसारिक लोगों का जन्मदिन मनाने का और अपने आपको खुश करने का तरीका है। यह उत्सव स्थूल मंडल का है। जब तक महाराज कृपाल स्थूल मंडल पर थे आपके सभी बच्चे इसी तरह आपका जन्मदिन मनाया करते थे और इस तरह आपकी खुशी प्राप्त करते थे।

अब आप स्थूल मंडल पर नहीं हैं अंतरी मंडलों में अपने घर वापिस चले गए हैं। अब हमें आपका जन्मदिन कैसे मनाना चाहिए? अब समय का तकाजा है कि हम आपके हुक्मों की पालना करें, अंदर जाएँ और आपसे मिलने के बाद आपका जन्मदिन मनाएँ। अब आप अंतरी मंडलों में है। अगर हम आपको खुश करना चाहते हैं तो हमें अंदर जाना चाहिए। केवल आपकी फिल्में देखकर, सतसंग करके और भंडारे में अच्छे खाने बनाकर उसे सतसंगियों में परोसकर और भी ऐसी कई बाहरी चीजें करने से बेशक आपको खुशी होगी लेकिन इतनी नहीं जितनी होनी चाहिए।

महाराज कृपाल अपने बच्चों से बहुत उम्मीद करते हैं। जब आप स्थूल मंडल पर थे, तब आपने हमें बहुत कुछ दिया। जो लोग आपकी दया के प्रति ग्रहणशील थे उन्हें ग्रहणशीलता के अनुसार प्राप्त हुआ। अब अंदर जाकर दया प्राप्त करने का समय आ गया है। प्यारे भाईयों और बहनों! मैं आशा करता हूँ कि इस जन्मदिन के संदेश में आपने मेरा संदेश समझ लिया होगा अगर हम सच्चे

मायनों में आपका जन्मदिन मनाना चाहते हैं अपने सर्वशक्तिमान पिता को खुश करना चाहते हैं तो हम सबको अंदर जाना पड़ेगा और आपसे मिलकर ही हमें आपका जन्मदिन मनाना चाहिए।

आजकल संसार बहुत तनाव से गुजर रहा है, आपको हर जगह तनाव ही मिलेगा। महाराज कृपाल सिंह जी इस दुखी संसार में अपनी आत्माओं को बचाने के लिए आए। हमें आपका इस धरती पर आने का मकसद याद रखना चाहिए और जैसा आप चाहते थे हमें इश्वरीय योजना के जागृत सहकर्मी बनना चाहिए।

आओ! आज के इस मुबारक दिन पर हम सब आपसे यह वायदा करें कि हम सभी एक-दूसरे से प्रेम करेंगे। अंदर जाने की और आपसे अंदर मिलने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेंगे। सन्तों का मार्ग लम्बा नहीं है लेकिन यह लम्बा प्रतीत होता है क्योंकि प्रेमियों में विश्वास मजबूत नहीं है। अगर हमारा गुरु में पूर्ण विश्वास हो और हम अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु के हवाले कर दें तो हम हुजूर महाराज का अगला जन्मदिन सच्चखंड में अपने सच्चे घर में आपकी मौजूदगी में मना सकते हैं।

मैं उम्मीद करता हूँ कि प्रेमी मेरे इस संदेश को समझेंगे और इस गरीब फकीर की विनती मानेंगे। सभी प्रेमियों को बहुत-बहुत प्यार और शुभकामनाएँ।

आपकी मधुर याद में

आपका प्यार से

अजायब सिंह

स्वामी जी महाराज
की बानी

सतसंग– परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

अपनी आदतें बदलें

सावन आश्रम – दिल्ली

सतसंग का मतलब नाम पावर के साथ सम्पर्क करना, सतसंग की चर्चा करना और सतसंग को समझना है। यह जगह सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर बात करने की नहीं है। यह नेकी करने की जगह है हमें इस जगह का आदर-सत्कार करना चाहिए। जब हम किसी मजहबी मंदिर में जाते हैं तो आदरपूर्ण नम्रता से जाते हैं, निश्चित ही हम वहाँ हाजिरी से कम प्राप्ति की उम्मीद करते हैं। इसी तरह पवित्र स्थानों पर सांसारिक मामलों की बात करना अपवित्र माना जाता है।

सतसंग में आपके आने का मकसद परमात्मा के प्यार को पाना परमात्मा की मधुर याद में बैठना और परमात्मा के साथ जुड़ना है। भूतकाल और भविष्यकाल की बेमतलब बातें आप अपने घर में ही सुलझा सकते हैं। आप यहाँ उत्तम लक्ष्य लेकर आए हैं, आप अपने साथ परमात्मा की याद लेकर आए हैं और जब आप यहाँ से जाएँ परमात्मा की याद लेकर ही जाएँ।

यहाँ आप लोगों की बातचीत न सुनें और न ही कोई किसी से बातचीत करे, ऐसा करने से आपको सतसंग से पूरा लाभ मिलेगा। बिना कोई लाभ प्राप्त किए हुए बहुत वक्त बीत गया है। पूरी तरह से तवज्जो को केंद्रित करने से ही आप कुछ पा सकेंगे।

अपनी आदतें बदलें अगर सतसंग एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया तो कुछ भी हासिल नहीं होगा। आप सतसंग में जो सुनते हैं उस पर अमल करेंगे तो आपको बहुत उपलब्धि

प्राप्त होगी नहीं तो सतसंग में आने का आपका मकसद असफल हो जाएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

करो री कोई सतसंग आज बनाए।

सतसंग में कैसे हिस्सा लें? जब आप सतसंग के लिए घर से निकलते हैं तो सभी सांसारिक मामले भूल जाएं। गुरु की मधुर याद में आएं और जब तक आप सतसंग में हैं आपको गुरु की मधुर याद के अलावा और किसी चीज के बारे में नहीं सोचना चाहिए। कबीर साहब कहते हैंः

मन तो कहीं और दिया, तन साधां के संग।
कहे कबीर कोरी गज्जी कैसे लागे रंग।।

सतसंग में जो कहा जाता है अगर सारा भी आपको समझ न आए फिर भी आप पूरे ध्यान से बैठेंगे तो आपको उससे फ़ायदा होगा। अगर आपका ध्यान कहीं और है उससे न सिर्फ आपका नुकसान होगा बल्कि आपके द्वारा बनाए गए अपवित्र वातावरण से और लोग भी प्रभावित होगें। ख्याल जीवित होते हैं और उनमें बहुत ताकत होती है। सतसंग को एक पवित्र जगह मानें। ऐसी जगह पर परमात्मा के अलावा किसी और चीज़ के बारे में बात न करें और न ही सोचें। जो भी सतसंग में आया है उसे उभार देने वाले वातावरण से दया मिलेगी। हम सतसंग में अपने मित्रों से मिलने या उनसे बातचीत करने के लिए नहीं आते।

गुरु हमें एक ऐसे सच्चे रिश्ते से बाँध देता है जो कभी खत्म नहीं हो सकता। गुरु का रिश्ता परमात्मा के साथ है वह इंसानी जामे में प्रकट है। यह एक ऐसा रिश्ता है जो जीते जी तो क्या मरने के बाद भी हमसे अलग नहीं हो सकता लेकिन हम अपनी ओछी समझ, निम्न श्रेणी की आदतों और अपनी बातों को मनवाने पर

जोर देते हैं फिर हम अपने सिर पर विपत्तियों का ढ़ेर बढ़वाने में कामयाब हो जाते हैं। अगर आप अपनी पुरानी अनावश्यक आदतों को नहीं बदलते तो इतनी देर सतसंग में आने का क्या फायदा? खुष्क जमीन पानी देने से हरी हो सकती है लेकिन उस जमीन का क्या फायदा जो पानी देने पर भी हरी न हो? सतसंग में आपकी हाज़िरी महज़ एक नित्य-नियम बनकर रह गई है, आपको केवल रटने से मुक्ति नहीं मिलेगी।

आध्यात्मिक रास्ते का क्या मतलब है? इसे समझने की कोशिश करें फिर उस तरह अपना जीवन ढ़ालें। आपको जितना ज्यादा ज्ञान होगा आप उतने ही सुखी होंगे। गुरु के वचनों को हृदय में रखें और गुरु की आज्ञा का पालन करें, केवल यही रास्ता है। अगर आप गुरु की आज्ञा नहीं मानेंगे तो क्या किया जा सकता है? मैं कई वर्षो से आपसे विनती कर रहा हूँ कि आपको जो यहाँ से मिल रहा है वह आपको कहीं और नहीं मिलेगा।

आप रूहानी डायरी नहीं रखते इसमें किसकी गलती है? आप तरक्की नहीं कर रहे, अब बचपना छोड़ें और बड़े हो जाएं। जो लोग सुनना और मानना नहीं चाहते उन लोगों को इस आध्यात्मिक रास्ते में दाखिल होने का साहस नहीं करना चाहिए। मैं कोई नई बात नहीं कर रहा हूँ। हम सब सन्त नहीं हैं लेकिन हम यहाँ सन्त बनने के लिए आए हैं। आप सन्त तभी बन सकते हैं अगर आप पूरी तरह से शिक्षाओं को समझेंगे और उन पर अमल करेंगे।

हर कोई गलती करता है। मुझे याद है एक दफा मैं दफ्तर से छुट्टियों पर था और वापिसी में पता चला कि दो कलर्क बर्खास्त कर दिए गए हैं। जब मैं उनका केस लेकर अपील के लिए कंट्रोलर के पास गया तो वह मुझसे उनकी योग्यता के बारे में सवाल करने

लगा लेकिन मैंने उससे कहा, ''आपको ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा जिससे कोई गलती न हुई हो लेकिन गलती की सजा बर्खास्तगी नहीं होनी चाहिए क्योंकि न सिर्फ वह व्यक्ति भुगतेगा बल्कि उसके बीवी और बच्चे भी भुगतेंगे। कंट्रोलर ने उन्हें नौकरी में बहाल कर दिया।

ऐसी शिक्षाएं नई नहीं है लेकिन इन्हें पूरी तरह समझने की कोशिश करें और इन्हें अपने जीवन में अपना लें अगर हम हुक्म मानना और डायरी रखना सीख लें तो हम देवी-देवता बन जाएँगे। आप यहाँ सत का संग करने के लिए आए हैं। सन्त हमें सच का ज्ञान देकर इसका ईलाज बताते हैं। स्वामी जी महाराज इस शब्द में इस स्थिति पर अफ़सोस जाहिर कर रहे हैंः

सतसंग करत बहुत दिन बीते। अब तो छोड़ पुरानी बान।।

ऐ इंसान! अब वक्त है कि **अपनी आदतें बदलें** और नई आदतें अपनाएं। एक ही चीज को बार-बार करने से आदत बन जाती है। हमें बुरे कर्मों जैसे झूठ बोलना, दिखावा करना, धोखाधड़ी करना, दूसरों की आलोचना करना, किसी से शत्रुता रखना, मन के अंदर लोभ-द्वेष रखना छोड़ देना चाहिए।

अगर आप इन आदतों को बदलना नहीं चाहते तो सतसंग में आने का क्या फायदा? आपके कदम आगे की ओर हैं लेकिन आपका मन आपको पीछे की ओर ले जा रहा है। आप **अपनी आदतें बदलें** क्योंकि आदतें समय के साथ स्वभाव में बदल जाती हैं। सभी नकारात्मक ख्यालों को निकालकर उनकी जगह सकारात्मक ख्यालों को स्थापित करें अगर कोई गलती करता है तो उसे माफ़ कर दें जिसने आपका बुरा किया है आप उसे भी माफ कर दें।

कुरान शरीफ में यह लिखा है कि खुदा भी उसे माफ नहीं करता जो बदलना नहीं चाहता। अगर हम खुद बदलेंगे तो हमारे साथ सारा संसार बदलेगा, यह संदेश सबके लिए है। सबसे बुरी आदत दूसरों की आलोचना करना है। सच्चा जीवन जीने में सभी नैतिक गुणों का पालन करना अच्छा है लेकिन *अहिंसा परमो धर्म* सबसे ऊँचा गुण है। यह एक नित की आदत बन सकती है क्योंकि यह हम सबके अंदर बसी हुई है फिर भी यह जाने-अनजाने में काम करती रहती है और एक दिन ऊपर आ जाती है।

आपको सतसंग में लगातार कहा जाता है कि जो बीत गया सो बीत गया। माफ़ कर दें और भूल जाएं। बुरे ख्यालों की नींव न बनाएं नहीं तो यक़ीनन प्रतिकर्म आपके सामने होंगे और आप हानि भुगतने वाले बन जाएंगे। आप फिर जन्म-मरण के चक्कर में आएंगे-जाएंगे। सन्त प्यार से अपने बच्चों को समय रहते हुए अपनी आदतें बदलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मानवजाति के लिए महान दया के साथ स्वामी जी महाराज फरमाते हैं:

कब लग करो कुटीलता गुरु से। अब तो गुरु को लो पहचान।।

आप सच्चे तथ्यों को छुपाकर सोचते हैं गुरु को क्या पता है? हम जो करना चाहते हैं वह सही है। गलती न करें गुरु हमारे हर कर्म को देख रहा है क्योंकि गुरु पावर हमारे अंदर है लेकिन हम मूर्खता से यह सोचते हैं कि वह हमें देखने के लिए मौजूद नहीं। हम कुछ भी करें उसे पता नहीं चलेगा। वह हमें समझाने और महसूस करवाने की कोशिश करता है कि गुरु क्या है?

गुरु केवल जिस्मानी स्वरूप नहीं बल्कि उसमें सर्वशक्तिमान परमात्मा की ताकत प्रकट है। सभी इस बात को मानते हैं कि

परमात्मा हर जगह है और सब कुछ देख रहा है कि गुरु क्या है? यह सीखने के लिए पूरी तवज्जो दें फिर उसे जानें। उसके पास अपनों के लिए औरों के लिए और जो उसके खिलाफ हैं उनके लिए भी प्यार है। उसकी ख्वाहिश सबका भला करने की है अगर उसकी गर्दन पर छुरा भी रखा जाए वह फिर भी बुरा करने वालों का बुरा नहीं सोचेगा। वह अलग है क्योंकि उसमें गुरु पावर है इसलिए वह प्यार और माफी की दौलत लुटाता है। हमें यह सब धोखाधड़ी बंद कर देनी चाहिए अगर आप अपने गुरु को गुरु समझते हैं तो गुरु का कहना मानें।

कई दफ़ा ऐसा भी हो सकता है कि दो मूर्ख प्यार के बंधन में धर्मों की बेड़ियों को तोड़कर जुड़े हों जबकि बुद्धिमान व्यक्ति प्यार के रेशमी धागों को बेझिझक तोड़ देते हैं। गुरमुख हार जाते हैं और संसार को जीतने देते हैं। जो प्यार और नम्रता की वजह से हार जाते है असल में वह जीत जाते हैं क्योंकि उन्होंने जो जोड़ा होता है वह बचा लेते है नहीं तो क्रोध की आग में उनका कीमती भंडार राख में भस्म हो जाता है।

जिस व्यक्ति में क्रोध नहीं उसमें जरा भी धुँआ नहीं दिखेगा। आप गुरु को पहचानने की कोशिश करें क्योंकि सतसंग का ताल्लुक गुरु से है। आप जब सतसंग में आते हैं तो उसकी याद में आएं क्योंकि वह इंसानी जामें में आया हुआ परमात्मा है। आप वहाँ उसकी याद में हाज़िर रहें और जब आप वहाँ से वापिस जाएं तो उसकी याद अपने साथ लेकर जाएं। हमें उन सभी गुणों का पालन करना चाहिए जो हमें वापिस परमात्मा के साथ जुड़ने में मदद करते हैं और जो अवगुण हमें उनसे दूर ले जाते हैं उन्हें छोड़ दें। परमात्मा का पाना मुश्किल नहीं लेकिन इंसान का बनना मुश्किल है।

हम सैंकड़ों दफा अपना सिर नीचा करके कहते हैं, ''हाँ हाँ मैं करूँगा।'' लेकिन करने के वक्त हम वही करते हैं जो हम चाहते हैं। यह जाहिर करता है कि हमनें अभी तक आध्यात्मिक रास्ते को नहीं समझा। अगर आपने अभी तक **अपनी आदतें नहीं बदली** तो एकदम से बदल दें इसी वक्त शुरूआत करें। गुरु सभी घटनाक्रम को एक अलग आँख से देखता है जबकि हर व्यक्ति अपने स्तर से देखता है अगर आपने किसी को अपने से बड़ा स्वीकार किया है तो उसकी आज्ञा का पालन करें।

जो शिक्षक अभी ऊँचे स्तर पर नहीं पहुँचा वह बड़ी आसानी से नीचे गिरने का कारण बन सकता है। जो ऊँचे मंडलों के हैं वे पूरी मानव जाति को फिर से जोड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं। आप सतसंग में सच को जानने के लिए आए हैं, अपनी विपत्तियों से मुक्ति पाने के लिए आए हैं इसलिए आपने सतसंग में जो सीखा है उसे धारण करना चाहिए और वह आपके नित्य जीवन में झलकना चाहिए। आपमें और आपके आस-पास के लोगों में शांति और खुशी फलनी-फूलनी चाहिए।

सतसंग एक विशेष पवित्र जगह है। आप जब तक यहाँ हैं आपके ख्याल पवित्र रहने चाहिए। परमात्मा को छोड़कर कोई भी ख्याल आपके मन में नहीं आना चाहिए। यहाँ आप जो हिदायत सुनते हैं बिना बहाने उस हिदायत पर अमल करें। ऐसा करके आप बेहतरी के लिए बदल जाएंगे नहीं तो इसका परिणाम भुगतेंगे।

कबीर साहब कहते है, ''जो गुरु को मनुष्य समझता है वह जन्म-जन्मांतर नीचे की योनियों में जाएगा।'' मनुष्य रूप में परमात्मा गुरु है। हम उसके शारीरिक स्वरूप की भी इज्जत करते हैं क्योंकि उसमें परमात्मा प्रकट होता है। वह हमें जो भी कहता है

चाहे वह सही प्रतीत न हो लेकिन वह हमारे फायदे के लिए बहुत जरूरी है। असल में हम दुखों के लिए रास्ता तैयार कर रहे हैं।

हम सतसंग में खुशियाँ प्राप्त करने के लिए आते हैं। जब आत्मा परमात्मा के साथ फिर से जुड़ती है तो आत्मा में परमात्मा के सभी गुण झलकते हैं। गुरु में सम्पूर्ण परमात्मा प्रकट है इसलिए वह हमें बताए बिना हमारे पाप साफ करता है। जब बच्चा गंदगी से गंदा हो जाता है तब माँ उसे फेंक नहीं देती बल्कि प्यार से उसे साफ करके अपनी छाती के साथ लगाती है।

इंसान की आत्मा बहुत प्यारी और कीमती है। पाप से घृणा करें लेकिन पापी से घृणा न करें। अगर हर व्यक्ति बुराइयों से परहेज करे तो हर जगह शांति और खुशहाली हो जाएगी। अगर आपका लक्ष्य सन्त बनना है तो आप तभी कामयाब होंगे जब आप जो सुनते हैं उसे समझेंगे तो सन्त बन जाएंगे।

गुरु को तुम मानुष मत जानो। वे हैं सतपुरुष की जान।।

गुरु कौन है? यह सवाल नया नहीं है, यह सवाल युगों-युगों से पूछा जा रहा है। जब यही सवाल गुरु नानकदेव जी से पूछा गया तब आपने कहा कि सदैव रहने वाला परमात्मा और उसकी ताकत शब्द गुरु है और सुरत उसकी शिष्या है:

शब्द गुरु सुरत धुन चेला।

जब यही सवाल कबीर साहब से पूछा गया तो आपने कहा, ''मेरा गुरु गगन से ऊपर है और शिष्य शरीर में है।'' जब हमारी आत्मा परमात्मा से जुड़ जाती है तो हमारा आना-जाना खत्म हो जाता है। वह खुद की ज्योति है जिस जामे में वह प्रकट है सिर्फ वही जामा औरों को ज्योति दे सकता है इसी तरह जिज्ञासु सच्चे गुरु

की पहचान कर सकता है। क्राइस्ट ने कहा है, ''मैं संसार की ज्योति हूँ जो मेरा अनुसरण करेगा वह अंधेरे में नहीं जाएगा बल्कि उसे जीवन ज्योति मिलेगी।'' जिस जामे में यह दौलत पाई जाती है यकीन करें वहाँ आपके मानने लायक कुछ और भी है।

वह किसी खास व्यक्ति के लिए नहीं आया है बल्कि वह सबसे प्यार करता है चाहे कोई किसी भी हालत में क्यों न हो वह उसे साफ़ करेगा। जो लोग अक्लमंद हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं वे देखेंगे कि उनकी तरक्क़ी हो रही है। जो उसके वचनों के आगे माथा टेकते हैं उन्हें अवश्य ही मुक्ति मिलेगी लेकिन जो दिखावे का माथा टेकते हैं और यह सोचते हैं कि गुरु को कुछ नहीं पता वे अपने जीवन को दुखदाई बनाते हैं। जो नाम हमारे अंदर छिपा हुआ है वह नाम गुरु में प्रकट है।

जहाँ वह आपको फलता-फूलता मिले वहाँ आपको अनुभव मिलेगा। थोड़ी सी सिखलाई से कोई भी किसी भी विषय पर उसके खिलाफ बोल सकता है लेकिन जब किसी व्यक्ति को कुछ प्राप्त होता है फिर कोई शक या सवाल ही नहीं रहता। जब वह ताकत यीशु नामी जामे के जरिए काम कर रही थी तब उसे क्राइस्ट पावर कहा गया। **यह ताकत समयानुसार मुक्तलिफ इंसानी जामों के जरिए काम करती है। जो भाग्यशाली इस ताकत से जुड़े हैं वे जानते हैं कि यह ताकत उन्हें छोड़कर कभी नहीं जाएगी।**

जैसे तैसे मन समझाओ। धर परतीत करो उन ध्यान।।

मन को समझाना कठिन है क्योंकि मन यह साबित करने की कोशिश करता है कि हम अपनी खोज में गलत हैं लेकिन हमें यह यकीन दिलाना होगा कि जिस जगह परमात्मा प्रकट है वहाँ शक

की कोई गुंजाईश नहीं। व्याख्यान, कहानियाँ, ज्ञान, दिखावा करना सब कुछ बहुत मात्रा में मिल सकता है लेकिन ज्योति कौन दे सकता है? अगर कोई जिज्ञासु के अंतर में ज्योति का भेद दे सके तो यह सबूत है कि उसके पास वह ताकत है, उससे प्राप्त करने के बाद उसकी आज्ञा का पालन करें।

जब आप अक्सर और लोगों को ज्योति प्राप्त करते हुए देखते हैं तो क्या यह सबूत काफ़ी नहीं? अगर आपको लड़ाई करने के लिए या एक-दूसरे को मारने के लिए कहा जाए तो शायद उस हुक्म को मानने में कोई झिझक हो सकती है लेकिन गुरु खुद अपने विरोधियों का भला चाहता है। इस तरह से महान गुणों को धारण करने से हम भी सन्त बन जाएँगे।

इकबाल कहता है कि जब हजरत मूसा पहाड़ पर चढ़कर परमात्मा से बात करने गए तो क्या मूसा को पता नहीं था कि परमात्मा खुद इंसान की तलाश में है? बाबा जयमल सिंह जी पंजाब छोड़कर सावन सिंह जी की तलाश में कोहमरी की पहाड़ियों पर गए क्या पूरे पंजाब में कोई लायक बंदा नहीं था? मैं यहाँ जिस बात पर जोर दे रहा हूँ वह यह है कि आपने गुरु के हुक्मों की पालना करनी है। अगर आप मन को हकीकत स्वीकार करने के लिए नहीं मनाओगे तो ऐसे ख्याल आएँगे कि क्या मैं गुरु से कम हूँ? मैं भी उनके जितना ही बड़ा हूँ और बहुत से ऐसे भ्रामक विचारों के जरिए द्वैत बढ़ जाएगी।

दया मेहर से बचन सुनावे। वे हैं पूरन पुरुष अनाम।

वह प्यार पैदा करता है क्योंकि वह सम्पूर्ण प्यार है, वह प्यार करना सिखाता है। वह जहाँ भी जाता है उसमें से प्यार की किरणें

निकलती हैं। वह वचन उचारता है ताकि हमारे अंतर में प्यार बढ़े। उसकी बात मानें और **अपनी आदतें बदलें** जो जन्म-जन्मांतरों से परत दर परत बढ़ती जा रही हैं अगर ऐसा नहीं करेंगे तो जन्म-मरण के चक्कर में लगे रहेंगे। गुरु की आज्ञा का पालन करने से हमारे अंदर परमात्मा के लिए प्यार पैदा होता है और हम परमात्मा को हर जीव में देखते हैं।

जब उसके शब्द भुलाए जाते हैं आपस में झगड़े बढ़ जाते हैं। अगर आप किसी को आहत करते हैं या उसके जीवन में दुख लाते हैं तो यह उसका स्वाभाविक प्रतिकर्म होगा कि वह उसी तरह का व्यवहार आपको वापिसी में देगा। कर्मों का प्रतिकर्म एक बहुत ताकतवर कानून है और वह आप पर लागू होगा।

स्वामी जी महाराज हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि हमें अपना चरित्र बदलना चाहिए। सन्त प्रेम का प्रतिबिम्ब हैं क्योंकि सकारात्मक परमात्मा की ताकत सिर्फ प्यार के जरिए ही काम करती है। यह देखा जा सकता है कि सन्त केवल प्यार से कार्य करते हैं जबकि अवतार सजा भी देते हैं। अवतार तब आते हैं जब नेकी खत्म हो रही होती है। अवतार जालिमों को सजा और बेगुनाहों को ईनाम देकर संसार की हालत का संतुलन करते हैं।

सन्त कहते हैं कि अब और गलतियाँ न करें। जो कोई उनके पास आता है वे उसे तुरंत परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं हालाँकि परमात्मा हमारे अंदर है फिर भी वे उसका प्रकट होना संभव कर देते हैं ताकि हम उसे देख सके।

धरी देह मानुष गुरु ने। ज्यों त्यों तेरा करे कल्याण।।

इंसान का शिक्षक केवल इंसान ही हो सकता है। एक बंदर चीखता है तो सैंकड़ो बंदर उसकी पुकार का जवाब देने के लिए उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं। एक चिड़िया चहचहाती है तो बहुत सी चिड़िया उसके इर्द-गिर्द इकट्ठी हो जाती हैं। गुरु मनुष्य जामे में सच्चाई की सही समझ देने के लिए आता है। हम ग्रंथों से कुछ जानकारी हासिल कर सकते हैं लेकिन जो यह संसार छोड़ गए हैं वे सही मायने में हमें रहनुमाई नहीं दे सकते।

अगर आकाश से सीधे भी कोई आवाज हमारी ओर आए तो हम सिर्फ यही टिप्पणी करेंगे कि इससे हमारा क्या मतलब? अगर किसी व्यक्ति का गुरु सांसारिक चीज़ों का त्याग कर चुका हो तो शिष्य को यही शक रहेगा कि उसका गुरु सांसारिक तकलीफों को नहीं समझ सकता क्योंकि वह महसूस करता है कि जिसने सांसारिक ऊतार-चढ़ाव अनुभव किए हैं केवल वही उसकी हालत को सही में समझ सकता है। एक सच्चे सन्त ने जीवन में सांसारिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में कामयाबी हासिल की होती है, वह इस बात का जीता जागता सबूत होता है।

जीवन के आदर्श बहुत जरुरी हैं और किसी को भी अपने महान आदर्श से नीचे नहीं गिरना चाहिए। सबसे ऊँचा आदर्श सच है अगर आपको सच्चाई से प्यार है तो आपको सबके साथ प्यार होगा। आप प्यार से दूसरों की गलतियों को भूल जाएं। खून के धब्बे खून से साफ नहीं किए जा सकते लेकिन प्यार के पानी से कुछ भी साफ किया जा सकता है।

सेवा कर पूजा कर उनकी। उन्ही को गुरु नानक जान।
वोही कबीर वोही सतनामा। सब संतन की वही पिछान।।

जिस तरह भी गुरु की सेवा कर सकें करें। सच्ची सेवा गुरु की आज्ञा का पालन करना है। गुरु जैसा बताते हैं उसी तरह पवित्र और सादगी के साथ प्रेमपूर्वक जीवन जिएं। अपने अंदर सच्चाई विकसित करें और अपने ख्यालों को शुद्ध रखें। परमात्मा हर जीव में रहता है इसलिए सभी जीवित प्राणियों से प्यार करें।

आपको बड़े भाग्य से इंसानी जामा मिला है इसका उत्तम इस्तेमाल करें और हर सहायक वस्तु जो आपको परमात्मा से जोड़ती है उससे फायदा उठाएं। हर व्यक्ति गलतियाँ करता है क्योंकि अभी सब सन्त नहीं बने लेकिन वे गलतियाँ दोहराई नहीं जानी चाहिए। परमात्मा की वही ताकत कबीर, गुरु नानकदेव और दूसरे सन्तों के जरिए काम करती रही है। जैसे एक फ्यूज बल्ब की जगह दूसरा बल्ब लगा दिया जाता है लेकिन उपदेश वही रहते हैं।

आपको याद होगा जब लोग एक व्याभिचार की दोषी औरत को यीशु के सामने लाए और उन लोगों ने यीशु से पूछा, ''क्या इस औरत को मूसा के कानून के मुताबिक पत्थर से मारें?'' तब यीशु ने कहा, ''तुममें से जिसने कोई पाप न किया हो वह इस औरत को पहला पत्थर मारे।'' यीशु ने उस औरत से कहा, ''जाओ और आगे से पाप मत करना।'' यीशु ने प्यार से उस औरत को माफ कर दिया और समझाने में उसकी मदद की। आखिर उस औरत को कुछ बनाना उनका काम था।

हज़रत मौहम्मद साहब फरमाते हैं अगर आप दो इंद्रियों को काबू कर सकते हैं- एक इन्द्री जो दोनों होठों के दरमियान है और दूसरी इन्द्री जो दोनों जाँघों के बीच है। तब मैं आपकी हिमायत के लिए परमात्मा के सामने खड़ा हो जाऊँगा।

गुरु पावर कभी मरती नहीं यह हमेशा रहने वाली ताकत है। यह क्राइस्ट के शब्द हैं, ''मैं इस संसार के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।'' ये शब्द यीशु में प्रकट क्राइस्ट पावर या गुरु पावर द्वारा उचारे गए थे। पूरा संसार एक घर है जिसमें सच बसता है। जो लोग सतसंग में आते हैं खासकर जिनका गुरु जीवित है उन लोगों को आपसी प्यार और एक-दूसरे को माफ करने वाले व्यवहार से एक मिसाल कायम करनी चाहिए।

क्राइस्ट ने भी यही कहा है अगर आपको एक-दूसरे से प्यार है तो इससे सब लोगों को मालूम होगा कि आप मेरे शिष्य हैं। उपदेश बुरे नहीं सतसंग बुरा नहीं जो सिखा रहा है वह भी बुरा नहीं अगर कुछ बुरा है तो वह हमारा मन है। अगर आप अपने जीवन में तरक्की करना चाहते हैं तो अपने मन को सही ढंग से समझाएं सब ठीक हो जाएगा। अगर हमने किसी व्यक्ति की थोड़ी सी तकलीफ दूर करने में मदद कर दी तो हमने बहुत बड़ी सेवा कर दी। अपने हमसायो पर पड़े हुए दुखों के बोझ को अपने मीठे शब्दों और हमदर्दी से बाँट लें।

तेरा काज उन्हीं से होगा। मत भटके तु तज अभिमान।।

इस संसार में हमारा काम परमात्मा से मिलना है। जो हमारी गलत समझ को हटाता है वही हमारा सच्चा मित्र है। हम यहाँ जायदादों के मालिक और रईसजादे बनने के लिए नहीं आए और न ही एक-दूसरे से वैरभाव पैदा करने आए हैं। हम यहाँ जीवन की सही समझ को ग्रहण करने आए हैं लेकिन अफसोस! हम रोजाना ज्यादा बीज बोते हैं इसलिए हमें वह फसल काटनी पड़ती है। हर किस्म का बीज अपना ही फल पैदा करता है अगर आपने दुश्मनी बोई है तो उसे प्यार से मिटाने की कोशिश करें।

आप इस संसार में नाम लेने के लिए आए हैं। आपको गुरु के घर परमात्मा का नाम मिल गया है। अब अपने अभिमान को त्याग दें और अपने मन को काबू में करें। हम कहते हैं कि हम बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति है बहुत बुद्धिमान हैं हम बहुत अच्छा व्याख्यान करते हैं हमारा दूसरों पर बहुत प्रभाव है लेकिन हमें यह सब छोड़कर सच का अभ्यास अपना लेना चाहिए। तभी हमारे अंदर सच्ची खुशी और आनंद आएगा। हम यहाँ सिर्फ परमात्मा को पाने के लिए आए हैं।

आप अपना काम करें दूसरों के काम में टाँग न अड़ाएं। गहराई से सोचें! अगर आपको कोई अवांछनिय वस्तु मिलती है तो उसे बाहर निकाल दें और प्यार से दूसरे लोगों की कमियों को दूर करने में उनकी मदद करें।

महाभारत के ग्रंथ में आता है कि राजा धृतराष्ट्र ने अर्जुन के ताकतवर धनुष की बेइज्जती की थी और अर्जुन ने धृतराष्ट्र को उसी समय मारने का प्रण कर लिया था। उस समय भगवान कृष्ण आगे आए और उन्होंने अर्जुन से कहा, ''तुम यह क्या कर रहे हो?'' अर्जुन ने जवाब दिया, ''मैंने यह पवित्र प्रण लिया हुआ है अगर कोई मेरे धनुष की बेइज्ज़ती करेगा तो मैं उसे मार दूँगा, यह मेरा धर्म है।'' कृष्ण ने फिर पूछा, ''धर्म का परिणाम क्या होता है, खुशी या गम?'' अर्जुन ने कहा, ''बेशक खुशी।'' भगवान कृष्ण ने मुस्कुराकर कहा, ''जरा सोचो! इस करनी का क्या नतीजा निकलेगा, इसमें तुम्हारा धर्म कहाँ है?''

सन्तों ने युगों-युगों से यही कहा है और क्राइस्ट ने भी यही सलाह दी है कि जैसा तुम औरों से अपने लिए चाहते हो वैसा ही तुम उनके लिए करो। कसाई सोच सकता है कि मारना अच्छा है

लेकिन उसके इस कर्म का नतीजा क्या है, क्या वह खुश हो सकता है? जब हम कर्म करते हैं तो हमें उसके नतीजे को तोलना चाहिए। हम जब तक अपनी पुरानी आदतों से जकड़े हुए हैं हम कभी भी कामयाब नहीं होंगे। हमें सच्ची खुशी तब मिलेगी जब हम गुरु की नूरी संगत और गुरु के शब्दों पर अमल करते हुए वापिस परमात्मा से जुड़ेंगे। गुरु ने खुद यह व्यवहारिक रास्ता अपनाया हुआ है जो मुक्ति प्राप्त करने का सबसे छोटा रास्ता है।

चूके मत औसर अब पाया। बढ़कर इन से कोई ना मिलान।।

अगर आप यह सुनहरी मौका खो देंगे तो फिर पता नहीं दूसरा मौका मिले या न मिले! अभिमान, चालाकी और सांसारिक आदतें छोड़ दें। एक आकर्षण से दूसरे आकर्षण तक भटकना बंद कर दें। आपको जैसा गुरु मिला है ऐसा गुरु नहीं मिलेगा। आपको जो भी मिलेगा वह परमात्मा से जोड़ने की बजाय आपको उससे अलग करने की कोशिश करेगा।

सतगुरु ऐसा जानिए, जो हरि स्यों लेण मिलाए जियो।

वह परमात्मा के सभी बच्चों को इकट्ठा करके उनके दरमियान बैठना चाहता है, ऐसी हस्तियाँ बहुत कम है अगर आपको ऐसी हस्ती मिल गई है तो उसकी आज्ञा का पालन करें, वह जो कहता है सो करें। अगर आप हुक्म मानने से इंकार कर देंगे तो आप तरक्की की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? गुरु की अपनी कोई स्वार्थी मंशा नहीं होती वह सिर्फ ऊपर से आए हुए हुक्म की पालना करता है। इसका किसी दल या षड्यंत्र से कोई वास्ता नहीं, न ही यह कोई राजनिति पैदा करने का मसला है। जब सब कुछ स्पष्ट और ईमानदारी वाला है तो नीति का सवाल ही पैदा नहीं होता। कुछ भी

छिपा हुआ नहीं है, उपदेशों के पीछे कोई गुप्त मंशा नहीं है। यह एक सीधा सा सच है जिसकी आत्मा परमात्मा से जुड़ गई है वह पूर्ण आनंद भोग रहा है। इंसानों में बहुत सी कमजोरियाँ हैं आपको पूरे विश्व में लोगों में वैरभाव और अशांति मिलेगी ऐसा इसलिए है क्योंकि हर व्यक्ति अपने मन की बात मान रहा है।

जो अब के तू गुरु से चूका। तो भरमेगा चारों खान।।

इंसानी जामें में सतगुरु का आशीर्वाद होने पर भी आप हुक्म न मानने की वजह से अगर यह मौका खो देते हैं तो कौन जाने आपको यह इंसानी जामा दोबारा कब मिले? जो लोग दूसरों की कमाई पर जीते हैं वे लेन-देन के कानून के अंतर्गत आ जाएँगे। अगर आप किसी को अप्रसन्न करते हैं या चोट पहुँचाते हैं तो आप उसका प्रतिकर्म उसी कानून के अंतर्गत भुगतेंगे, आप वहीं पैदा हो जाएंगे ताकि ठीक ढंग से हिसाब बराबर हो सके।

जहाँ आसा तहाँ वासा।

आग सूखी लकड़ियों को जला देती है और हरी लकड़ियों को भी जला देती है। सबने कभी न कभी जाना है। आपको कीमती खजाना मिला है उसे बचाए रखेंगे तो कामयाब हो जाएंगे। जो बिना दिखावे के चुपचाप अपना काम करते हैं, वे शांत जीवन जीते हैं।

जिस जल निध कारण तुम जग आए सो अमृत गुरु से पाई जीयो।

जडभारत एक राजा था, उसी के नाम पर हिन्दुस्तान को भारत कहा जाता है। वह परमात्मा को पाने के लिए अपना राजपाट छोड़कर जंगलों में रहने चला गया। वहाँ उसे एक हिरन से लगाव हो गया। मृत्यु के बाद उसका हिरन के रूप में पुनर्जन्म हुआ।

फिर ऐसे गुरु मिलें न कबही। मान मान तू अबही मान।।

यह बड़ी आसानी से समझ आता है कि आजकल गुरुवाद की इतनी गरीब प्रतिष्ठा क्यों है? ज्यादातर गुरु अपने दिल में राजनितिज्ञ हैं। लोगों के ऊपर अपनी ताकत बनाकर राज्य करना और पैसे बनाने की इच्छा रखते हैं। मानव जाति की हालत के लिए सच्ची हमदर्दी करने की बजाय मानने वालों का विश्वास हासिल करने के लिए झूठ और चालाकियाँ इस्तेमाल करते हैं। ऐसे प्रदर्शन से लोग ज्यादा खुश होते हैं। आखिर सच सच है और झूठ झूठ है। काला सफेद नहीं हो सकता चाहे उसे कितना भी धो लें। पूरे भाग्य से ही शिष्य को सच्चा गुरु मिलता है।

बिना भाग सतगुर न मिलहि।।

अगर आपको भाग्य से सतगुरु मिले हैं तो आप उनकी आज्ञा का पालन करें, आप कामयाब हो जाएंगे। बहुत वर्ष बीत गए हैं आखिर अब तो पुरानी आदतें छोड़ दें।

पढ़ पढ़ पोथी गा गा सखी। क्यों मन में तू धरता मान।।

क्या आप लोगों को इस बात का मान है कि आप औरों से बेहतर गा सकते हैं या आप लिखे हुए ग्रंथों की अच्छी व्याख्या कर सकते हैं? इनमें कौन सी असली उपलब्धि है जिसका आप अभिमान करते हैं कि आप दूसरों से ज्यादा जानते हैं?

राजा रावण एक ज्ञानी योगी था, उसे चार वेदों और छह शास्त्रों का ज्ञान था लेकिन आज हम उसे किस तरह याद करते हैं? उसने जो भी ज्ञान या तरक्की पाई थी वह गवाँ दी। शैक्षिक रूप में प्रवीण होना कोई आध्यात्मिकता की उपलब्धि नहीं है। चतुर होना, पढ़ना-लिखना यह सब आसान है। चतुर होना, ताकतवर शब्दों से धरती आकाश को एक कर देना कोई मुश्किल नहीं है। ख्वाहिशों

को बस में करना, शरीर को छोड़ना, मन को काबू में करना मुश्किल है। सच्चाई अपने सामने रखें। आप गुरु की तारीफ करते रहते हैं लेकिन उसे अपने दिल में बसने नहीं देते। जो गुरु के हुक्मों के आगे माथा टेकेगा उसे मुक्ति मिलेगी। सारा संसार गुरु को देखता है लेकिन मुक्ति गुरु के शब्दों से प्यार करे बिना नहीं मिलती। यह शब्द बिना किसी भेदभाव के उचारे जाते हैं। यह नियम गरीब-अमीर, छोटे-बड़े सब पर लागू होते हैं।

सन्त स्पष्ट बोलते हैं। अभिमान और अहंकार हमें तरक्की नहीं करने देते। जब हम गलती करते हैं तो अपनी गलती को नहीं मानते। हमारे दिल में यह ख्याल है कि मुझसे महान और कोई नहीं। स्वाभिमान और प्रशंसा दोनों मन की खुराक हैं। इस कमी में जकड़े होने की वजह से कई दफा हम गुरु को भी एक तरफ कर देते हैं। यह कहते हुए कि गुरु को क्या पता है? माँ हमेशा अपने बच्चे की बेहतरी का ध्यान रखती है इसी तरह गुरु को भी अपने शिष्यों की तरक्की का फिक्र है। क्या यह संभव है अगर बच्चा माँ से बुरा बर्ताव करे तो क्या माँ बच्चे को घर निकाल देगी? सच्चाई यह है कि हम गुरु को जानने की कोशिश भी नहीं करते। अहंकार छोड़ दें नहीं तो आपका पतन होगा।

इसी मान ने ख्वार किया है। यही मान अब करता हान।।

हमें इंसानी जामा कई दफा मिला होगा लेकिन मान और अहंकार ने हमें बार-बार मारा है और बार-बार हमारे अच्छे कार्यों को बर्बाद करके हमें उसी जगह वापिस ला दिया है। पहले भी हमारी बर्बादी हुई और अब भी मान और अहंकार हमें बर्बाद कर रहे हैं। मन की बात न सुनें गुरु के शब्दों को मानें जो आपके लिए

परम आनंद लाएगा। मन की बात को मानना आपको कभी न खत्म होने वाली विपत्ति देगा, मन ने हमेशा तकलीफों को जन्म दिया है।

जैसा आपका गुरु करता है वैसे ही क्रोध को प्यार से धो डालें। चाहे मानव जाति उसके बारे में अच्छी या बुरी टिप्पणी करे वह अपना कर्तव्य नहीं छोड़ता। वह औरों की कमाई पर अपना जीवन व्यतीत नहीं करता और न ही अपने लिए किसी से कुछ स्वीकार करता है, उसे कोई ख्वाहिश नहीं है। अगर कोई सतसंग में पैसा लेकर आता है तो वह पैसा सतसंग में इस्तेमाल होता है। मैं आज तक अपनी पेंशन से निर्वाह कर रहा हूँ। अगर सलाह अच्छी है तो उसकी कद्र करें और शुक्रगुजार होवें।

ता ते प्यारे कहुं बुझाई। यह इस्तिगना भली ना जान।
जल्दी करो कपट को छोड़ो। सरधा भाव बढ़ाओ आन।।

अगर आप अपनी आदतें नहीं बदलते तो आपकी लापरवाही से आपको हानि होगी। दिल में कुछ है, जुबान पर कुछ और हमारे कर्म तो कुछ और ही बयान करते हैं। जितनी जल्दी हो सके ऐसे छल छोड़ दें। चालाकियों वाले सभी रास्ते छोड़कर नम्रता विकसित करें अगर आप ऐसा करेंगे तो गुरु खुद आपको गले लगाएगा। भक्ति करने वाला रवैया आपके अंदर खुद एक जगह बना लेगा।

इतने पर मन कहा न माने। तो फिर अपनी तू ही जान।।

अगर आप समझने से इंकार करते हैं तो कुछ नहीं हो सकता। आपको अपनी गलतियों का भुगतान करना पड़ेगा। इस जगह पर आकर सन्त भी हार जाते हैं और वे कहते है, ''अगर आप लोग नहीं सुनते तो हम क्या कर सकते हैं?''

सिर पर तेरे हुकुम काल का । ताँ ते मन तेरा नहि मान।।

आपके सिर पर काल का हाथ है। मन आपको कहना नहीं मानने देगा। काल द्वैत को बढ़ाता जाएगा और ज्यादा मुश्किल पैदा कर देगा। काल इस द्वैत को हराने में आपकी कोई मदद नहीं करेगा। केवल सकारात्मक गुरु पावर ही आपकी मदद कर सकती है। दोनों ताकतों में यह सुस्पष्ट भेद है।

एक बात जानी हम भाई। है तू बढ़का बेईमान।।

आखिर में जब कोई सुनना और मानना ही नहीं चाहता तो कोई क्या करे? सम्मान बहुत बड़ा गुण है। वह कैसा इंसान है जिसमें कोई गुण ही नहीं है?

लगा रहेगा संग में गुरु के। सहज सहज शायद मन मान।।

मन को साथ लेकर लगे रहें, गुरु को न छोड़ें। धीरे-धीरे समझने की कोशिश करते रहें अवश्य ही वहाँ उम्मीद होगी। कभी विश्वास कभी अविश्वास इससे कोई इलाज नहीं होगा। बिन पेंदी के लोटे में काई नहीं जम सकती।

मैं आपको बता चुका हूँ कैसे पता लगेगा कि गुरु सच्चा है। अगर गुरु सच्चा है तो उससे चिपके रहें, उसके वचन सुनें और अपना पूरा जोर लगाकर उन्हें समझने की कोशिश करें। अगर मन का कहना नहीं मानेंगे तो कामयाब हो जाएंगे। मन बीच में खड़ा हो सकता है लेकिन आत्मा को पता है कि गुरु क्या है और परमात्मा क्या है?

राधास्वामी कहैं बुझाई। ऐसे जीव होएँ हैरान।।

***

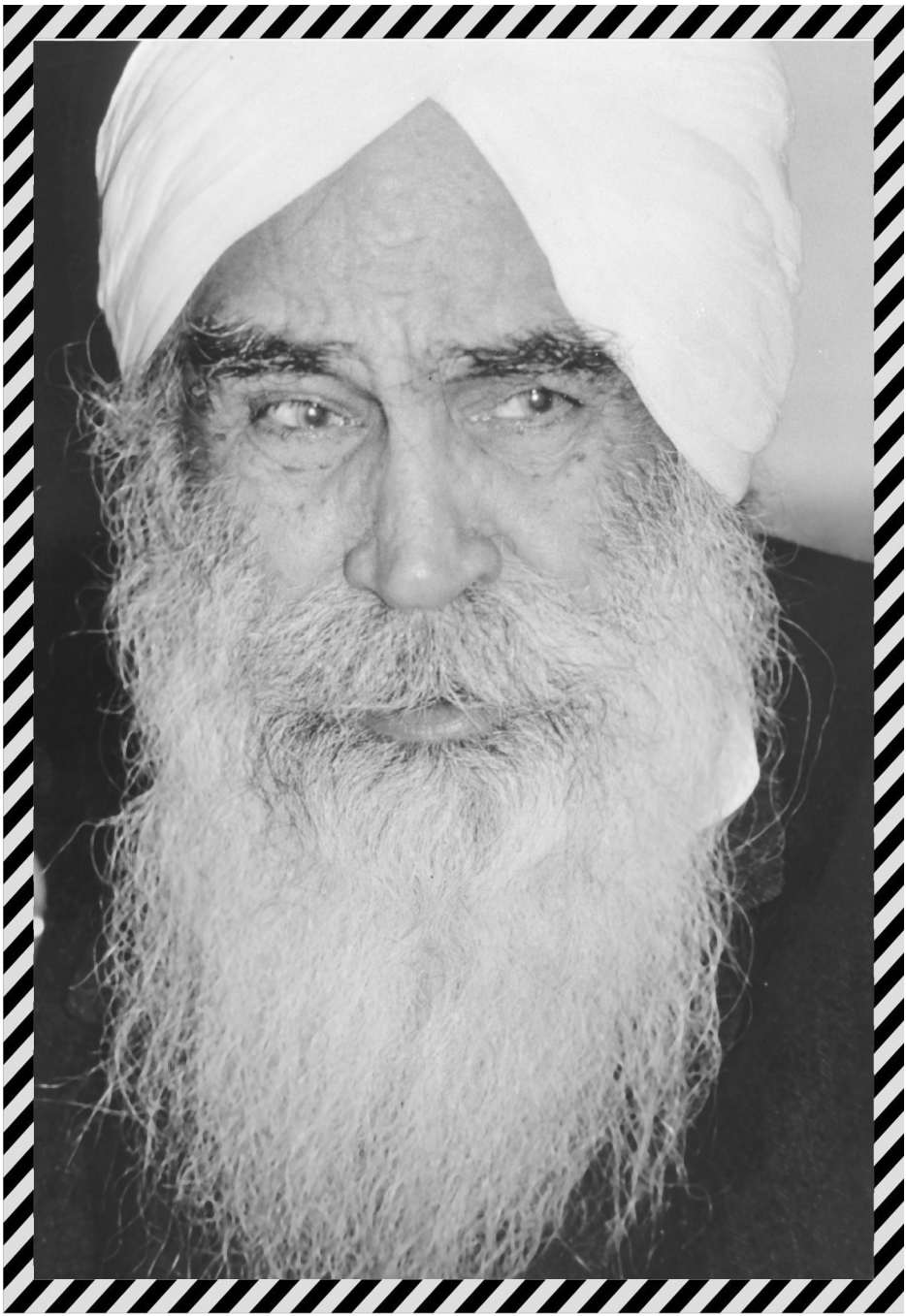

14 फरवरी 1971

अपने यंत्र को धूल से मुक्त करें

एक प्रेमी: *सन्त जी! अगर कानों पर अंगूठे रखे बिना धुन सुनाई दे तो क्या तब भी हमें कानों पर अंगूठे रखने चाहिए?*

सन्त जी: जो धुन कानों को बंद किए बिना सुनाई देती है वह एक उपहार है लेकिन जब तक आप अपने कान बंद नहीं करेंगे और सुनने के लिए नहीं बैठेंगे तो ऊपर से आ रही धुन आपको खींचकर पार नहीं ले जाएगी।

कोई शक्ति आपके सिर के ऊपर है अगर आप अपना ध्यान उस धुन की ओर मोड़ देंगे तो आप अपना सारा काम पूरा कर लेंगे और बाहरी प्रभावों का आपके ऊपर कोई असर नहीं होगा। वह आपको काल से बचाने वाली एक चादर की तरह काम करेगी, आप एयर कंडीशनर की तरह ठंडे हो जाएंगे।

एक प्रेमी: *कई बार हम कानों को अंगूठों से बंद किए बिना धुन सुनते हैं जो बहुत ज्यादा शक्तिशाली होती है?*

सन्त जी: ऐसा इसलिए होता है कि जिस मंडल पर सतगुरु रहते हैं वहाँ से चार्जिंग मिलती है। आप इस चार्जिंग को कम न समझें। यह आपको बिना किसी प्रयास के बिना कोई मूल्य चुकाए मुफ्त में मिलती है। गुरु की शारीरिक उपस्थिति आत्मा के स्तर पर कम नहीं आँकी जा सकती। अगर आपने ग्रहणशीलता पैदा कर ली है तो आपको दूर से भी चार्जिंग मिलेगी। अगर आपने ग्रहणशीलता पैदा कर ली है तो गुरु की प्यार भरी मधुर याद में वहाँ का वातावरण चार्ज हो जाएगा।

अगर आप ग्रहणशीलता पैदा कर लेते हैं तो आप गुरुमुख बन जाते है, आप बात करेंगे तो वहाँ चार्जिंग होगी क्योंकि वातावरण में शब्द वहीं पर है। वातावरण में सोच आपको बढ़ावा देगी। आप टेलीविजन को ही ले लें हजारों मील से आवाज सुनाई देती है। वहाँ पहले से ही आवाज है अगर आप उसे पकड़ लेते हैं तो आपको ग्रहणशीलता से बहुत बढ़ावा मिलेगा।

आपके पास पूर्ण विकसित यंत्र नहीं है इसलिए आप अपने क्षेत्र के रेडियो यंत्र की आवाज नहीं सुन पा रहे। यह विचार की वही लहर है आप अपने यंत्र को चलाएं ताकि आवाज सुन सकें। जब आप अपने गुरु के साथ एक हो जाते हैं तो आपके और आपके गुरु के बीच में कोई विचार नहीं रह जाता।

अगर आपके यंत्र में कुछ धूल है तो क्या आपको लगता है कि वह संदेश प्राप्त करेगा? उसी प्रकार मुश्किलें होते हुए भी मैसेज फिर भी चल रहा है। सतगुरु कहते हैं आप बैठें, आप उसमें मिल जाएंगे। कई बार पिछली प्रतिक्रियाओं के कारण कुछ लोग धुन तो सुनते हैं लेकिन उन्हें पता नहीं होता कि आगे क्या करें? उन्हें लगता है कि उनके कानों को कोई बीमारी लग गई है और वे उसका डॉक्टरी इलाज करवाते हैं।

संदेश अलग-अलग तरह के होते हैं। गुरु सबसे ऊँचे मैसेज देता है। परमात्मा गुरु द्वारा बात करता है लेकिन वह निचले स्तर पर भी सचेत है और दूसरों को उनके स्तर पर भी समझाएगा। ये बातें आपको किताबों में नहीं मिलेगी। मैं आपको साधारण समझ के अनुसार ही बता रहा हूँ कि जो सोच आपके गुरु की है वही सोच आपकी भी हो सकती है।

मैंने आपको कुछ कहावती मिसालें देकर समझा दिया है। एक बार कुछ तस्वीरें बनाने वाले पेंटर किसी दूसरे देश में गए और उन्होंने वहाँ के राजा से एक दीवार पेंट करने की आज्ञा माँगी। उन्हें हॉल की एक दीवार पेंट करने के लिए दे दी गई। उसी देश के कुछ लोग राजा के पास आए और उन्होंने भी एक दीवार पेंट करने की माँग की। राजा के मंत्रियों ने एक लम्बा सा पर्दा उस हॉल के बीच में लगा दिया ताकि वे एक-दूसरे का काम न देख सकें।

विदेशी पेंटर बहुत मेहनत कर रहे थे लेकिन दूसरी तरफ वाले कुछ नहीं कर रहे थे। जब पेंटिंग तैयार हो गई तो पर्दा हटा दिया गया। राजा यह देखकर हैरान हुआ कि जो विदेशी पेंटरों ने पेंटिंग बनाई थी बिल्कुल वैसी ही पेंटिंग दूसरी दीवार पर थी। जब उनसे पूछा गया कि तुमने क्या किया? तब उन्होंने कहा हमने कुछ नहीं किया हमने सिर्फ दीवार को रगड़ा है जिससे प्रतिबिंब दिख सके। अगर आप ग्रहणशीलता पैदा कर लेते हैं तो गुरु आपके द्वारा बात करता है लेकिन तब जब आपके और गुरु के बीच कुछ न रहे, यही भक्ति है। दूसरों को प्रभावित करना, दूसरों पर हमला करना, दूसरों का मन पढ़ना भक्ति नहीं।

ग्रहणशीलता पैदा करना पहला कदम है। ऐसा करते जाओ तीनों मंडल पार कर जाआगे, यह काम एक दिन में पूरा नहीं हो सकता नियमित रूप से करना पड़ता है। करते जाओ जिससे आप ग्रहणशील बन सकें। आपके और गुरु के बीच कोई छिपाव न रहे। जब आप किसी से प्रेम करते हैं तो क्या उससे कुछ छिपाते हैं?

एक प्रेमी: *क्या मैं किसी और को वह पत्र दिखा सकता हूँ जिसमें पाँच पवित्र 'नाम' के शब्द लिखे हैं?*

सन्त जीः आप यह पत्र नामलेवा को दिखा सकते हैं। नामदान के समय पाँच शब्द दिए जाते हैं। ये पाँच शब्द किताबों में से नहीं दिए गए इनके पीछे गुरु की चार्जिंग काम करती है। इन पाँचों शब्दों का मतलब भी समझाया जाता है लेकिन इन पाँच शब्दों की व्याख्या केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो नामलेवा हैं।

परमात्मा ने वैज्ञानिक तरीके से समझाया है जैसे पॉवर सभी मंडलों पर काम कर रही है और अपनी पॉजिशन के हिसाब से अलग-अलग नामों से बुलाई जाती है। परमात्मा एक पावर है जो अलग-अलग मंडलो पर उस मंडल के हिसाब से अलग-अलग नामों से बुलाई जाती है। जो पावर पहले मंडल पर काम करती है सबसे ऊँचे मंडल पर वह सत्य है जो कभी नहीं मरता, कभी नहीं बदलता, उसे सच्चाई कहते हैं। वही पावर जब दूसरे मंडल पर काम करती है तो वह शारीरिक, भौतिक या कारण के बिना होती है तब शिष्य को समझ आ जाती है कि वह मुझमें हैं और मैं उसमें हूँ। नाम का यही मतलब है।

इसी तरह तीसरा- शारीरिक, भौतिक और कारण मंडलो से परे घूमते हैं बाकी दूसरे मंडल मृत्यु के आस-पास घूमते है। यही व्याख्या है। मैं आपके आगे एक साधारण समझ रख रहा हूँ जिससे हर कोई कुछ समझ सके। अगर आपको इन पाँच शब्दों के अर्थ पता भी हो तो इससे आपको क्या मदद मिलेगी? केवल चार्जिंग मदद करेगी। गुरु जो शब्द कहता है उसका अपना प्रभाव होता है। वे शब्द अंदर के नकारात्मक प्रभावों के खिलाफ लड़ते हैं।

समय आने पर ये उपहार अपने आप आपके पास आ जाएँगे। इंसानी जामा होने से आपको परमात्मा के उपहार पाने का अधिकार मिल जाएगा ये सब आपके लिए है।

एक शक्तिशाली आदमी अपनी शक्ति दिखाता है लेकिन एक कमजोर आदमी हैरान होता है कि उसने यह शक्ति कैसे पाई? क्या उसे यह शक्ति एक ही दिन में मिल गई? ऐसे अभ्यास आपको उस स्तर पर ऊपर लाने के लिए है अगर आपको इन सबका ज्ञान भी हो जाए तो क्या ये आपकी मदद करेंगे?

आपके पिता के घर में बहुत बड़े-बड़े भण्डार हैं। वहाँ बहुत सारे काम करने वाले हैं लेकिन फिर भी इन सबसे आपको क्या मदद मिलेगी? ये व्याख्या केवल उनके लिए है जो इन मंडलों पर गए ही नहीं। आप वहाँ पहुँचें और खुद देखें कि वहाँ प्रकाश है या नहीं? शुरुआत में आपको थोड़ा बढ़ावा मिलेगा लेकिन यही अंत नहीं है। आप इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। यह हमारा सबसे जरूरी निजी काम है जिसकी हम कीमत नहीं लगा सकते।

मैं यह नहीं कहना चाहता कि आप अपने सारे काम छोड़ दें। आप अपनी जीविका कमाएं। परमात्मा ने जिनको आपके साथ जोड़ा है उनको भी दें और उनके लिए काम भी करें। आपको नाम मिल गया है, अब आप चौबिस घंटों में से अपनी सहूलियत के हिसाब से कुछ समय दें।

सतगुरु ने आपके लम्बे धागे काट दिए हैं। अपनी साँसो को नियत्रिंत करके शरीर चेतना से ऊपर आने, एक से दूसरे चक्र में जाने और फिर अंत में उसकी कमाई करने के लिए आपको सैकड़ो साल लग जाते हैं। अब पहले ही दिन आपको सतगुरु से कुछ मिल जाता है। पिछले समय में सतगुरु नाम तभी देते थे जब बर्तन तैयार होता था, पहले बर्तन को साफ करने में सालो-साल लग जाते थे फिर नाम दिया जाता था। क्या यह बहुत बड़ी रियायत नहीं?

मैं यही कह सकता हूँ कि आप भजन-अभ्यास के लिए खुश होकर जाएं। सोच में पड़कर या उदास होकर न जाएं जैसे आपके सिर पर कोई बोझ लाद दिया हो। वह पहले से ही आपके अंदर है आपने केवल बाहर से अपना ध्यान हटाना है। बाहर से आपके अंदर कुछ नहीं डाला जा सकता वह पहले से ही वहाँ है। आप उसे अपना प्रिय बना लें जो पहले से ही आपके अंदर मौजूद है।

हम आध्यात्मिकता की ओर ठीक से ध्यान नहीं देते। आप कितना समय शारीरिक चीजों को देते हैं, अपनी जीविका कमाने के लिए लंबे समय तक यहाँ-वहाँ काम करते हैं। अगर आपको कुआँ खोदना पड़ता तो कितना समय लगता? अगर आपके नाम पर बैंक में पैसा जमा कराया जाए तो आपको सिर्फ बैंक की खिड़की तक ही जाना पड़ेगा। आप अपने ख्याल को बाहर से हटाएं अंदर देखें किसी ज्ञान की जरुरत नहीं। कोई अनुमान न लगाएं आपको इतना तो पक्का हो जाएगा कि प्रकाश है।

वेद-शास्त्र जो कहते हैं वह सब ठीक है। प्रकाश होता है अगर आप उतना ही यकीन कर लें कि आपके अंदर प्रकाश है तो मुझे लगता है हमें यह भी यकीन करना होगा जो वे हमें आगे बताते हैं वह भी ठीक है। अगर पहली बात सच है तो बाकी चीजें भी सच होंगी। अपने यंत्र को बिना किसी बाहरी धूल के बनाएं।

आप यहाँ आए हैं। मुझे जो कहना था मैंने कह दिया आप यहाँ से खुश होकर जाएं। खुश रहें, तरोताजा रहें खुले विचार रखें। परमात्मा आप सब का भला करे।

***